<u>एनपीसीआईल का पर्यावरण प्रबंध कार्यक्रम</u>

जे देवप्रकाश

एनपीसीआईएल का परिचय

परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई), भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन ***न्यूक्लियर पावर कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल),*** परमाणु ऊर्जा के उत्पादन में संलग्न है। डिज़ाइन, निर्माण, कमीशनिंग और प्रचालन में मज़बूत क्षमताओं के साथ एनपीसीआईएल भारत में परमाणु संयंत्रों का निर्माण और संचालन करता है। वर्तमान में यह देश के सात भिन्न-2 स्थानों पर स्थित कुल 5780 मेगावाट की स्थापित क्षमता के साथ 21 परमाणु विद्युत रिएक्टरों का प्रचालन करता है।

इसके रिएक्टर बेड़े में दो बायलिंग वाटर रिएक्टर्स (बीडब्ल्यूआर), 18 प्रेसराइज्ड हैवी वाटर रिएक्टर्स (पीएचडब्ल्यूआर) और एक प्रेसराइज्ड वाटर रिएक्टर (पीडब्ल्यूआर) शामिल है। इसके अलावा एनपीसीआईएल कुल 3800 मेगावाट की कुल क्षमता के साथ पांच और रिएक्टरों का निर्माण कर रहा है।

प्रकृति के सम्मान में : एक कुशाग्र कार्यक्रम

भारतीय परमाणु विद्युत संयंत्रों के आसपास के क्षेत्र में वन्यजीव बहुतायत में हैं। एक ज़िम्मेदार कार्पोरेट सिटीजन के तौर पर एनपीसीआईएल ने इस निर्मल प्रकृति के प्रबंधन के लिये निर्णायक कदम उठाये हैं।

2006 में, इसने अपने प्रकृति से स्नेह रखने वाले कर्मचारियों को सदस्य के तौर पर शामिल करते हुए पर्यावरण प्रबंध कार्यक्रम अथवा ईएसपी के नाम से विशेष पहल की शुरूआत की। प्रकृति क्लबों की स्थापना की गई और पक्षी निगरानी और वास प्रबंधन जैसे कार्यक्रम शुरू किये गये। सदस्य पारिस्थितिकी प्रणाली के संरक्षण में मदद कर रहे हैं। कार्य समय के दौरान, वे परमाणु विद्युत संयंत्र के भीतर विद्युत के उत्पादन में व्यस्त रहते हैं, जबकि कई लोग अपना सवेरे और शाम का समय कार्यस्थल के आसपास वन्यजीवों के व्यवहार और वास की आनंदमय देखरेख के लिये व्यतीत करते हैं।

पर्यावरण प्रबंधन कार्यक्रम (ईएसपी) कार्यों के पेशेवर तरीके से संचालन के लिये तीन स्तरीय दृष्टिकोण को अपनाते हैंः तकनीकी जानकारी के लिये प्रमुख प्रकृति संरक्षण संस्थानों के साथ संबद्धता, दो, प्रकृति पर निगाह और उसके संरक्षण के संबंध में सदस्यों को अद्यतन रखने के लिये प्रशिक्षण प्रदान करना और तीन, लोगों को पर्यावरण के महत्व के बारे में संवेदनशील करना।

अपवर्जन क्षेत्र : जहां प्रकृति की व्यापक सुंदरता है.

भारतीय परमाणु विद्युत संयंत्रों के स्थल वे स्थान हैं, जहां आधुनिक विज्ञान मौलिक प्रकृति के साथ मौजूद है। इन सातों स्थलों में प्रत्येक के दो प्रमुख भाग होते हैं जो कमज़ोर दीवारों से अलग होते हैं। चारदीवारी के भीतर शानदार परमाणु विद्युत संयंत्र स्थित होते हैं, जहां पर परमाणुओं को विद्युत के लिये खंडित किया जाता है, और इनका व्यापक फैलाव क्षेत्र प्रकृति से घिरा है।

इसके पीछे का तर्क यह है कि इन दो घटनाओं के बीच किस प्रकार सामंजस्य स्थापित रहता है। इसकी वैषम्यता क़रीब एक मील दायरा क्षेत्र की है, जिसे अपवर्जन क्षेत्र पुकारा जाता है और इसे सड़कों और संयंत्र बिल्डिंग्स के लिये प्रयोग में लाया जाता है जबकि शेष अबाधित रहता है। दूसरे, इसमें वास के लिये प्रचुर मात्रा में जल स्रोत और अन्य विशिष्टताएं और मज़बूत वनस्पति मौजूद रहती हैं। तीसरे यहां के पर्यावरण पर कुल मिलाकर कोई मानवीय दखलंदाज़ी नहीं होती क्योंकि केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल द्वारा रक्षित इस क्षेत्र में कोई मकान नहीं होता है।

इन सबसे अधिक, परमाणु विद्युत उत्पादन प्रकृति के साथ सही सामंजस्य कायम रखता है। ये पर्यावरण को प्रभावित करने वाली कोई हानिकार गैसें अथवा तत्वों का उत्सर्जन नहीं करते। आसपास कोई प्रदूषण नहीं होने से वनस्पतियां खूब पनपती हैं और वन संरक्षित रहते हैं।

आश्रय, भोजन, पानी और स्वच्छ वायुः ये विशेषताएं वन्यजीवों जैसे कि पक्षियों, तितलियों, सरीसृप जंतुओं और स्तनपायी प्राणियों को भारतीय परमाणु

विद्युत संयंत्रों के स्थल की ओर बहुत आकृष्ट करती हैं। अतः इसमें कोई आश्चर्य वाली बात नहीं है कि इनमें से बहुत ने अपवर्जन क्षेत्र को अपना आवास बना लिया है। प्रमुख प्रकृतिक संरक्षण संस्थानों के सहयोग से किये गये अध्ययनों के अनुसार भारतीय परमाणु विद्युत संयंत्रों के अपवर्जन क्षेत्र सैंकड़ों पौधों, पक्षियों की 200 से अधिक प्रजातियों, तितलियों की क़रीब 70 प्रजातियों, बहुत से स्तनपायी जीवों और सरीसृप जंतुओं तथा बड़ी संख्या में जलजीव प्रजातियों का ठिकाना बने हुए हैं।

एनपीसीआईएल का पर्यावरण प्रबंध कार्यक्रम (ईएसपी) इन मूल्यवान पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण में मदद करता है। प्रत्येक एनपीसीआईएल स्थल पर ईएसपी के सदस्य अपने संबंधित क्षेत्र के आसपास प्रकृति के संरक्षण में सहायता करते हैं। वे पक्षियों और तितलियों पर ऋतु अनुसार सर्वेक्षण करते हैं, प्रवासी पक्षियों की निगरानी करते हैं, आर्द्रभूमि को सूखने से बचाते हैं, तितलियों के लिये कीटनाशक मुक्त उद्यानों की स्थापना करते हैं, आश्रयस्थलों का प्रबंधन करते हैं और लोगों में वन्यजीव के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करते हैं।

प्रकृति क्लबः पर्यावरण संरक्षण में मददगार

पर्यावरण प्रबंधन कार्यक्रम आरंभ करते हुए एनपीसीआईएल ने कुल सात, अपने प्रत्येक स्थल पर एक, प्रकृति क्लबों की स्थापना की है। इन क्लबों का नामकरण क्षेत्र में पाये गये एक डरावने पक्षी के नाम पर किया गया है। उदाहरण के लिये नरोरा परमाणु विद्युत केंद्र में प्रकृति क्लब को भारतीय स्किमर रायनचोप्स अलबिकोजिस, दुर्लभ घोषित जल क्षेत्र में मिलने वाला पक्षी, की यादगार में स्किमर नेचर क्लब के नाम से पुकारा जाता है, जो कि नरोरा में पाया जाता है। इसी प्रकार राजस्थान परमाणु विद्युत केंद्र में प्रकृति क्लब का नाम जिप्स वल्चर्स के नाम से जिप्स नेचर क्लब के तौर पर रखा गया है। इसी के अनुरूप अन्य प्रकृति क्लबोंः काकरापाड़ परमाणु विद्युत केंद्र का आईबिस नेचर क्लब, तारापुर परमाणु विद्युत केंद्र का हैरियर नेचर क्लब, कैगा परमाणु विद्युत केंद्र का फ्रोग

माउथ नेचर क्लब, कुडानकुलम परमाणु विद्यत परियोजना का पेजिकन नेचर क्लब और मद्रास परमाणु विद्युत केंद्र का स्टोर्क नेचर क्लब, का नामकरण किया गया।

संबंधित स्थल के कर्मचारी इन क्लबों के सदस्य बनते हैं। क्लब में शामिल होने की केवल दो अपेक्षाएं होती हैं। ये हैं, प्रकृति से प्रेम और प्रकृति से जुड़े कार्यक्रम में शामिल होने की इच्छाशक्ति। प्रोत्साहन के साथ क़रीब 30-40 कर्मचारी प्रत्येक स्थल पर सदस्य बन जाते हैं। एनपीसीआईएल में कुल मिलाकर क़रीब 200 कर्मचारी प्रकृति क्लबों से जुड़े हैं।

शुरूआत में क्लब की गतिविधियां पक्षियों पर केंद्रित थी, क्योंकि पक्षियों का पालन प्रकृति से निकटता कायम करने और इसे समझने का सबसे आसान मार्ग है। लेकिन समय बीतने के साथ-साथ गतिविधियां विस्तारित होती गईं और परियोजनाएं पक्षिवृंदों में शामिल होती गईं। पर्यावरण प्रबंधन कार्यक्रम के भाग के तौर पर आवास प्रबंध कार्यक्रम शुरू किये गये, तितली उद्यानों की स्थापना की गई और कछुआ पालन केंद्र स्थापित किया गया।

एनपीसीआईएल प्रबंध से पूर्ण समर्थन के साथ सदस्य काफी मात्रा में पर्यावरण गतिविधियां संचालित कर रहे हैं। इनमें प्रकृति की देखभाल से लेकर जन जागृति अभियान, तितली सर्वेक्षण से लेकर पक्षी मैराथन, आर्द्रभूमि के अध्ययन से लेकर कछुओं के संरक्षण तक, वास सुधार से लेकर पर्यावरण संरक्षण और क्षेत्र निगरानी से लेकर प्रतिवेदन प्रकाशन तक, बहुत से कार्यों की गिनती की जा सकती है।

*जे देवप्रकाश, प्रबंधक (मास मीडिया) कार्पोरेट कम्यूनिकेशन्स, न्यूक्लियर पावर कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, मुंबई